भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकलपनाएं

सम्पादक : डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001

प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
Books n Books
51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001
ई-मेल : bnbajmer@gmail.com

संस्करण
प्रथम 2025

ISBN : 978 - 81 - 993854 - 7 - 4

मूल्य - 300/-

रचना -
भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक -
डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

आवरण -
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

मुद्रक -
श्री श्याम ऑफसेट, किशनगढ़

अमीर खुसरो : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

नरेन्द्र सिंह नाथावत
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

तेरहवीं सदी का प्रसिद्ध फारसी तथा ब्रज भाषा का विद्वान, भारत भक्त, संगीत, शिक्षा का चितेरा, राष्ट्रकवि 'अमीर खुसरो' अपने समय के लोक साहित्यकार थे। उन्हें प्रथम हिन्दवी कवि तथा प्रथम राष्ट्रकवि (मलिक्कुशोअरा) कहा गया। वे अपनी मातृभाषा (हिंदवी) पर गर्व करते थे वे कहते हैं- चू मन तूतीए-हिन्दम अररास्त पुरसी जमन हिंदवी पुर्सता नग्ज गोयम्। अर्थात् सच पूछते हो तो मैं हिन्द का तोता हूँ। मुझसे हिन्दी में पूछो तो मैं बेहतर जवाब दे सकता हूँ। वे साम्प्रदायिक सद्भाव के साथ उर्दू भाषा, संगीत के आविष्कारक थे। भारत के बाहर ईरान, अफगानिस्तान, तुर्किस्तान, पेरिस, लंदन, रोम, बर्लिन, ब्रूसेल्स, डबलिन, तजाकिस्तान आदि देशों में अमीर खुसरो के साहित्य का संग्रह ही नहीं अपितु उनका अध्ययन आदर और श्रद्धा के साथ किया जाता है।

अमीर खुसरो भारतीय जनमानस के कंठहार थे। इनके पिता हजारा तुर्क थे तो माँ हिन्दुस्तान की थीं। इनके पिता सैफुद्दीन शम्सी, चंगेज खान के आक्रमण के कारण तुर्किस्तान से आकर हिन्दुस्तान में बस गये थे। उस समय दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश थे। इल्तुतमिश ने उनकी सैनिक योग्यता को दृष्टिगोचर रखते हुए उन्हें शाही सेना में 'सरदार' नियुक्त किया। जिनका वेतन बारह सौ टंके था। बाद में उन्हें जागीर देकर 'चालीस दल' का सदस्य बना दिया था।

इल्तुतमिश के दरबार में रहते हुए नव मुस्लिम (धर्मान्तरण से राजपूत रावल इमाददुलमुल्क जिन्होंने मुस्लिम धर्म ग्रहण किया।) नवाब इमादुलमुल्क के परिवार में धर्मान्तरण के बाद भी हिन्दु रीति-रिवाज का पालन किया जाता था। अमीर खुसरो ने अपने पिता को 'कुरतुल कमाल' पुस्तक की भूमिका में अपने पिता को 'उम्मी' अर्थात मोटे तौर पर अनपढ़ कहा है।

इन्होंने अपनी पुत्री बीबी दौलतनाज का विवाह अमीर सैफुद्दीन से कर दिया था। इन्हीं के तीन पुत्रों में बीच का पुत्र अबुल हसन यमुनुद्दीन था जो 'अमीर खुसरो' के नाम से प्रसिद्ध हुए। हिन्दु संस्कारों में पली होने के कारण खुसरो पर उनका

प्रभाव पड़ा। इन्हें 'अमीर' की उपाधि दिल्ली के सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने दी थी। जबकि राज दरबार में इनका सम्पर्क सुल्तान बलवान के समय ही हो गया था प्रसिद्ध विद्वान अमीर हसन 'देहलवी' के साथ। शेख सादी ने अमीर खुसरो के बारे में, सुल्तान बलबन को लिखा था कि आपके यहां खुसरो जैसे बड़े कवि हैं आप उनका सम्मान कीजिये, यही मेरा सम्मान है। अमीर खुसरो ने अपनी बाल्यावस्था के विषय में तोहफ-उस-सफर, प्रसिद्ध फारसी दीवान में लिखा है- ''मेरे वालिद मुझे मदरसा भेजा करते थे, लेकिन मैं महज़बीनों के खत की तारीफ में शेर कहता था।'' अमीर खुसरो का प्रारम्भिक जीवन बड़े उतार-चढ़ाव में बीता था। बचपन में पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने अपने सर से नाना का साया भी उठते देखा था। अनेक कठिनाइयाँ और मुसीबतें भी उन्होंने झेली। फाकामस्ती में दिन गुजारे तो राजसी ठाठ-बाट का भी उपयोग किया। लड़ाइयों में भाग लिया और लोगों को कटते-मरते देखा। उन्होंने बलबन के बड़े बेटे सुल्तान मोहम्मद, बलबन के भतीजे कल्लू खाँ उर्फ मलिक छज्जू, बुगरा खाँ, खान अमीर अली, जलालुद्दीन खिलजी, कुतुबुद्दीन, मलिक तुगलक और मोहम्मद तुगलक के दरबारों में विभिन्न पदों पर काम किया। लेकिन वो मुरीद थे तो ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया के, जिनके सान्निध्य में ही उन्हें आत्मिक शान्ति मिलती थी।

स्वयं की प्रवृत्ति के विषय में उन्होंने अपने दीवान 'तोहफ-उस-सफर' में लिखा है- ''खाना खाने का वक्त छोड़कर मैं कभी चुप नहीं रहता। जो भी मिलता है उससे बातें करता हूँ। गँवारों से बतियाता हूँ और बच्चों को प्यार करता हूँ। उन्हीं में मुझे इंसानियत के सच्चे गुण मिलते हैं। मैं हिन्दुस्तान के सीधे-सच्चे, पवित्र और स्वाभिमानी आम लोगों को प्यार करता हूँ, बल्कि पूजता हूँ और यही मेरा शगल है। मुझे यह कहने में खुशी होती है कि खुश रहने के लिए ये सीधे-साधे लोग काफी हैं। अगर मेरे पास कभी कोई बगीचा हो, तो उसमें फूलों, कुंजों और चश्मों के लिए कोई जगह न हो ये हो नहीं सकता। मैं तो सिर्फ इतनी जगह चाहता हूँ जहाँ मैं खुलकर घूम-फिर सकूँ और आम इंसानी फूलों में गुफ्तगू कर सकूँ। ये मासूम, शर्मीले, उत्फुल्ल और फरिश्तों के-से मिजाज वाले लोग सही मायने में हमारे वतन के बेला-चमेली हैं। जहाँ भी मैं जाता हूँ ऐसे ही लोगों की भीड़ मुझे घेर लेती है, मैं उनसे बातें करता हूँ, उनके साथ हँसता हूँ, गाता हूँ और मजे उड़ाता हूँ।''

1944 में अखिल भारतीय इतिहास परिषद के मद्रास अधिवेशन में सैयद सुलेमान नदवी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कितनी सही बात कही थी कि अमीर खुसरो ने हिन्दुस्तान की खाक को अपनी आंखों का सुरमा बनाया यद्यपि वे नस्ल से तुर्क थे, मगर उनका दिल हिन्दुस्तान की मिट्टी से बना था। अमीर खुसरो ने भारत के फल,

मेवों, उद्यान, इमारतों, संगीत, वाद्ययंत्रों, ऋतुओं, रीति-रिवाज, मेलों, त्यौहारों इत्यादि का गहरी अनुभूति से सार्थक और सटीक वर्णन किया है।

डॉ. परमानन्द पांचाल ने लिखा है - अमीर खुसरो भारत के मेवों और फलों की प्रशंसा करते नहीं थकते। वे कहते हैं कि हमारे यहाँ दो ऐसे तोहफे हैं जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। पहला तो गरीबों का फल मौज (केला) है, जो कि अन्य जगहों पर नहीं होता। दूसरा पान है जो फल की भाँति बड़े गर्व से खाया जाता है। पान की बराबरी भला कैसे हो सकती है? फलों में वे आम के बहुत प्रशंसक हैं। वे लिखते हैं कि जो लोग अंजीरों को हमारे आम से बेहतर समझते हैं, वे उस अंधी औरत की तरह हैं, जो 'बसरे' को 'शाम' से उत्तम मानती है। उनको हिंदुस्तान का खरबूजा भी बहुत पसन्द था।

हज़रते देहली कनफे दीन व दान
जन्नते अदन अस्त कि आबाद बाद

अर्थात् दिल्ली के न्याय की कीर्ति दूर-दूर तक फैली है। वह अदन की जन्नत (स्वर्ग) है। अपनी विशेषताओं के कारण यह 'बागे अरम' (स्वर्ग के बाग) की भाँति है।

गर शनूद किस्सा ई बोस्ताँ
मक्का शवद तायफे हिन्दोस्ताँ।

अर्थात् इस बोस्ताँ (बाग) का किस्सा सुनकर मक्का भी 'हिन्दोस्तान' का तवाफ (परिक्रमा) करने लगे। इस प्रकार वे इसे अरब के पवित्र नगर मक्का पर भी वरीयता देते हैं। किले के संबंध में कहते हैं-'चर्ख ब ज़ेरस्त व हिसारश बज़रब' अर्थात् आकाश का दायरा नीचे रह गया और इस किले की दीवारें ऊपर।

कुतुबमीनार के संबंध में लिखते हैं कि इस मीनार को देखकर चाँद ने अपनी टोपी उतार फेंकी है।

वे यहाँ के फूलों की प्रशंसा में लिखते हैं कि यहाँ फूलों की बहार वर्ष भर रहती है और सब तरफ हरा-ही-हरा दिखाई देता है-

खित्तर सब्जा व सहरा व किश्त
नुस्खा गिरफ्तार जै सुवादे बिहिश्त

फलों के बारे में वे लिखते हैं कि यहाँ हिन्दोस्ताँ और खुरासान के मेवे बराबर मिलते हैं। कुछ फल तो ऐसे हैं जिन्हें खुरासान में किसी ने चखा भी न होगा-

मेवा ज हिन्द व खुरासाँ बसे
ज आँचे न खूर दा व खुरासाँ कसे।

दिल्ली का खरबूजा स्वर्ग के सभी फलों से बाजी मार ले गया है। इसमें कंद

जैसी मिठास पाई जाती है-

खर्पजा गोई के बसहरा ब कश्त
गोए रबूद अज समराते बिहिश्त।
सभाभवन को भली भाँति सँवारा गया था-
सफए नौ ताक बियारास्त बंद
पर्द प-जरबफ्ते फलक स्वास्तंद

खुसरो को दिल्ली से अत्यधिक प्रेम था, इसी कारण उन्होंने इसकी विविध चीजों की इतनी प्रशंसा की है। उन्होंने इस मनसवी का नाम ही 'मसनवी दरसिफ्त देहली' रखा था।

उसने ईरानी और भारतीय रागों के मिश्रण से कुछ रागिनियाँ भी बनाईं। इनके अलावा हिन्दी संगीत में कुछ धुनों का आविष्कार भी किया, जैसे-कौल, तराना, नक्श, गुल, कल्बाना, बसीत और सुहेला आदि। मौ. शिबली नौमानी के अनुसार खुसरो ने हिन्दी-ईरानी संगीत से जिन रागिनियों का निर्माण किया वे निम्न प्रकार हैं। फकीरुल्लाह के 'राग दर्पण' में भी इनका उल्लेख है-

1. राग मुजीर-'गारा' और एक फारसी राग का मिश्रण है।
2. साज़गिरी-पूर्वी, गौरा, गुण, कली और एक फारसी राग का मेल है।
3. ऐमन-हिंडोल में फारसी राग 'नौरोज़' मिलाया गया है।
4. उश्शाक-सारंग, बसन्त और एक फारसी राग से मिलकर बना है।
5. मुवाफिक-तोड़ी, मौलश्री और फारसी दो गाह हुसैनी को मिश्रित किया गया है।
6. गनम-पूर्वी में परिवर्तन किया गया है।
7. जील्फ - खट राग में फारसी राग 'शहनाज' को मिलाकर बना है।
8. फरगना - सोलह हिन्दी रागों में एक फारसी राग मिलाया गया है।
9. सर पर्दाह - गौड़, सारंग और बिलावल में फारसी राग या धुन 'रास्त' को मिलाया गया है।
10. बाखर्ज-विकार में फारसी राग मिलकर बना है।
11. फरो-दस्त-कानड़ा, गौरी और पूर्वी के साथ एक फारसी राग मिलाया गया है।
12. मुनअम (सगम) - राग कल्याण में एक फारसी राग मिलाया गया है।

खुसरो की रचनायें :-

नवाब इसहाक खाँ के सैयद हसन बिलग्रामी इमादुलमुल्क के परामर्श से 1915 ई. में खुसरो की निम्नलिखित रचनाओं का पता लगाया था-(1) तोहफ्तुस्सिगर,

(2) वसतुलहयात, (3) दबीचा गुर्रतुलकमाल, (4) गुर्रतुलकमाल, (5) बकिया नकिया, (6) मतला उल अनवार, (7) शीरीं व खुसरो, (8) मजनू लैला, (9) हस्त बहिश्त, (10) आइने-सिकन्दरी, (11) किरान-उल-साअदीन, (12) इश्किया, (13) नूह-सिपहर, (14) मुफ्ताह-उल-फतूह, (15) मजमूआ मसनवियात, (16) रुबाइयात, (17) कुलियात, (18) कसाइद अमीर खुसरो, (19) एजाज खुसरवी, (20) इंशाए खुसरो, (21) अहवाल खुसरो, (22) निहायतुल-कमाल, (23) खजाइन उनल फतूह, (24) निसाब बदी उल अजायब व निसाब मुसलस, (25) अफजल उल फवायद, (26) खालिकबारी, (27) किस्सा चहार दरवेश, (28) बाजनामा, (29) असपनामा, (30) बहरुल-अबर, (31) मरातुल सिफा, (32) शहर आशूब, (33) तुगलकनामा, (34) ताजुल फतूह, (35) तारीख देहली, (36) मुनाकब-ए-हिन्द, (37) हालात कन्हैया व कृष्ण, (38) मक्तूबात अमीर खुसरो, (39) जवाहर उल जर, (40) मकाला, (41) राहतुल जबीं, (42) रिसाला अबियात बहस खुसरो जामी, (43) शगरफ़ बयान, (44) तराना हिन्दी, (45) मुनाजात खुसरो।

अमीर खुसरो ने बहुत साहित्य लिखा। कुछ विद्वानों के अनुसार मुख्य रूप से फारसी का साहित्य अधिक है जो इस प्रकार है-

1. एजाज़े-ख़ुसरवी, खजाइन-उल-फतूह, 3. अफ़जल-उल-फव्वायद (गद्य), 4. तोहफ्त-उस-सफ़र, 5. वसतुल-हयात, 6. गुर्रतुल कमाल, 7. बाकिया-तकिया, 8. नियाहत-उल-कमाल (दीवान), 9. किरान-उल-सआदीन, 10. मफ्ताह-उल-फुतूह, 11. इश्किया-ख़िजर खाँ व दोलल रानी, 12. नूह सिफहर, 13. तुगलक नामा, 14. मतला-उल-अनवर, 15. शीरीं-खुसरो, 16. मजनूं-लैला, 17. आईन-ए-सिकन्दरी, 18. हश्त बिहिश्त, 19. मसनवी शिकायत नामा मोमिनपुर पटियाली।

खुसरो की हिन्दी की रचनाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। अमीर खुसरो ने हिन्दी में निम्नलिखित विधाओं में अपनी रचनाएँ लिखी हैं-1. शब्द कोश : खालिक बारी, 2. पहेलियाँ-बूझ पहेली और अनबूझ पहेली, 3. मुकरनी, 4. दो सखुने, 5. निसबत, 6. ढकोसला, 7. ग़जल : फारसी-हिन्दी, 8. दोहे, 9. गीत, 10. कव्वाली आदि।

विभिन्न स्रोतों से संकलित अमीर खुसरो की निम्नलिखित लगभग समस्त रचनाएँ प्रस्तुत हैं-

खालिक बारी -

खालिक का शाब्दिक अर्थ है-रचनाकार, उत्पत्तिकर्ता, स्रष्टा, ईश्वर। बारी का भी वही अर्थ है, यानी खालिक बारी परस्पर पर्यायवाची हैं। खुसरो का यह कोश भी पर्यायवाची शब्दों का कोश है। यह उनकी सबसे लोकप्रिय रचना है। यह हिन्दी-उर्दू का पहला शब्द कोश है। इसे संस्कृत के 'अमरकोश' की तरह महत्वपूर्ण माना गया

है। संस्कृत परम्परा के अनुसार यह भी पद्य में है। संस्कृत में ज्योतिष, अंकगणित आदि विषयों के ग्रन्थ भी पद्य में है ताकि याद करने में आसानी हो। खालिक बारी में 215 अशआर (शेर) कहे गए हैं। ''अगर हम तुर्कों को हिन्द में रहना है, सदा के लिए बसना है तो सबसे पहले हमें यहां के लोगों के दिलों में घर करना होगा और दिलों में बसने के लिए सबसे पहली जरूरत है इनकी जुबान में इनसे बातें करना, इनके दिल की बातों को शायरी में बांधना।'' बाद में जोड़ने वालों ने इस कथन में यह और जोड़ा ''तुर्कों को हिन्दवी सिखाने के ख्याल से ही मैने खलिकबारी नाम की किताब लिखी है। '' हर शेर में अरबी-फारसी शब्दों के पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। जैसे-

ख़ाजलक बारी, सिरजनहार
वाहिद, एक, बंदा करतार

इस कोश में अरबी के 237 शब्द, फारसी के 280 शब्द, तुर्की के 2 शब्द और हिन्दी के 275 शबद हैं।

इनके अतिरिक्त रुदिरनामा (मिर्जा गालिब), अल्लाहबारी (1707 हि.-अहसन), कादिर शादी (1210-फरयदा), इजदबारी, अहमदबारी, फौजबारी आदि अनेक रचनाएँ पकाश में आई हैं। कई पाठ्य पुस्तकें तो खालिकबारी के ही नाम से लिखी गई है जैसे-खालिकबारी-मुहम्मद अकरम, खालिकबारी-गुलामअली शाह।

अमीर खुसरो ने मध्यकाल में साहित्य और शैक्षिक व्यवहार के विभिन्न आयाम स्थापित किये। उन्होंने बूझ पहेलियां व अबूझ पहेलियां, कहमुकरियां (अस्वीकार, मुकर जाना), दो सखुने (वार्ता), निस्बतें (सम्बंध), गजल, ढकोसला, गीत, दोहे, कव्वाली, ख्याल, मसनवियाँ, खालिकबारी इत्यादि। उनकी प्रसिद्ध शैलियां और रचनायें हैं।

अमीर खुसरो की पहेलियां प्राचीन भारत में प्रचलित (संस्कृत में अंतर्लीपी) विधा ही थीं। कुछ विद्वानों ने इन्हें पहेली का सूक्त [12] कहा गया है। ऋग्वेद में पहेलियाँ प्रतीकात्मक तथा रहस्यात्मक अनुभूति को स्पष्ट करती हैं। खुसरो ने स्वयं स्वीकार किया था कि ये संस्कृत में पहेलियों के रूप में मिलती हैं। इनमें जिज्ञासा तथा रोचकता का होना आवश्यक है प्राचीन वैदिक शिक्षण व्यवस्था में प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग मिलता है। वस्तुतः पहेलियां इसी लोक शिक्षण व्यवस्था का अंग हैं।

अमीर खुसरो की उपर्युक्त विधाओं का निम्नानुसार वर्णन किया गया है-

पहेलियाँ

(क) पहेलियाँ :- खुसरो की इन पहेलियों का उत्तर भी पहेली में ही छुपा होता है। लोक शिक्षण को दृष्टि में रखते हुए इनकी रचना की थी। ये दो प्रकार की हैं बूझ

और अबूझ पहेली -

(अ) बूझ पहेलियाँ

1. श्याम बरन और दाँत अनेक, लचकत जैसे नारी,
   दोनों हाथ से खुसरो खींचे, और कहे तू आरी। - आरी
2. पौन चलत वह देह बढ़ावै, जल पीवत वह जीव गँवावै।
   है यह प्यारी सुन्दर नार, नार नहीं है, पर है वह नार। - नार (आग)

(ब) अनबूझ पहेली

1. एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंध धरा,
   चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।

2. गोरी सुन्दर पातली, केसर काले रंग, ग्यारह देवर छोड़कर, चली जेठ के संग।

(ख) अनबूझ पहेलियाँ :- अमीर खुसरो ने जो पहेलियाँ बूझी नहीं गई हैं। इन्हें संस्कृत में 'बहिर्लापिका' कहा गया है।

1. जलकर बने जल में रहे, आँखों देखा खुसरो कहे। - काजल
2. एक अनोखा गिरह बनाया, ऊपर नींव नीचे घर छाया।
   बाँस न बल्ली बंधन घने, कह खुसरो घर कैसे बने।
   - बया का घोंसला
3. सब कोई उसको जाने हैं, पर एक नहीं पहचाने हैं।
   आठ घड़ी में लेखा है, फिकर किया उन देखा है। - परमात्मा
4. दस नारी का एक ही नर, बस्ती बाहर वाका घर,
   पीठ सख्त और पेट नरम, मुँह मीठा तासीर गरम। - खरबूजा
5. एक राजा की अनोखी रानी, नीचे से वह पीवे पानी।
   - दिये की बत्ती
6. एक नार ने अचरज किया। साँप मार पिंजरे में दिया।।
   ज्यों-ज्यों साँप ताल को खाए। ताल सूखे और साँप मर जाए।।
   - दिये की बत्ती
7. आगे से वह गाँठ गठीला। पीछे से है टेढ़ा।।
   हाथ लगाए कहर खुदा का। बूझ पहेला मेरा।। - बिच्छू
8. एक गुनी ने यह गुन कीना। हरियल पिंजरे में दे दीना।।
   देखा जादूगर का हाल। डाले हरा निकाले लाल।। - पान
9. बात की बात ठठोली की ठठोली।
   मरद की गाँठ औरत नेखोली।। - ताली

10. माटी रौंदूँ, चक धरूँ, फेरूँ बारंबार।
चातुर हो तो जान ले, मेरी जात गँवार। - कुम्हार

11. नर नारी को जो नर भाये, यह दुख उस पर होवे हाये,
टुकड़ा हो और कुछ न कहे, सीस कटे तो पड़ा रहे। - कपड़ा

(ख) कहमुकरियाँ

1. उछल कूद कर जो वह आया, धरा ढका सभी कुछ खाया।
दौड़ झपट जा बैठा अन्दर, ऐ सखि साजन, ना सखि बंदर।
- बंदर

2. वह आवे तब शादी होय, वा बिन शादी करे न कोय।
मीठे लागें वाके बोल, ऐ सखि साजन, ना सखि ढोल। - ढोल

3. सगरी रैन छतियन पर राखा, रंग-रूप सब वापका चाखा।
भोर भई जब दिया उतार, ऐ सखि साजन, ना सखि हार। - हार

(ग) निस्बतें

1 घोड़े और हरफों में क्या निस्बत है? - नुक्ता, लाम
2 घोड़े और बजाज में क्या निस्बत है? - जीन, थान
3 मकान और पायजामें में क्या निस्बत है? - मोरी
4 आम और जेवर में क्या निस्बत है? - कैरी (कीरी)
5 बजाज और फल में क्या निस्बत है? - कमरख
6 आम या शलजम और कपड़े में क्या निस्बत है? - जाली

(घ) दो-सुखने हिन्दी

1. दीवार क्यों टूटी? राह क्यों लूटी? - राज न था
2. पानी क्यों न भरा? हार क्यों न पहना? - घड़ा न था
3. रोटी क्यों सूखी? बस्ती क्यों उजड़ी? - खाई न थी
4. सितार क्यों न बजा? औरत क्यों न नहाई? - पर्दा न था
5. अनार क्यों न चक्खा? वजीर क्यों न रक्खा? - दाना न था
6. जोगी क्यों भागा? ढोलकी क्यों न बजी? - मढ़ी न थी

(2) फारसी और हिन्दी मिश्रित

1. माशूक रा चे मी बायद कर्द? हिंदुओं का रख कौन है? - राम
2. शिकार बाचे मी बायद कर्द? कूवते-मग्ज को क्या चाहिए? - बादाम
3. शिकारी रा चे मी बायद? मुसाफिर को क्या चाहिए? - दाम
4. सौदागर बच्च: राचे मी दायद? बूचे को क्या चाहिए? - दुकान, दोकान
5. कोह चे मी दारद? मुसाफिर को क्या चाहिए? - संग

(ङ) ढकोसले

1. भैंस चढ़ी बिटोरी और लप-लप गूलर खाय
   उतर आ मेरे राँड की, कहीं हिफ्ज न फट जाय।
2. भैंस चढ़ी बबूल पर और लप-लप गूलर खाय
   दुम उठा के देखा तो पूरनमासी के तीन दिन।
3. गोरी के नैना ऐसे बडे जैसे बैल के सींग।

(च) गीत

1. अम्मा मोरे बाबा को भेजो जी,
   कि सावन आया।
   बेटी तेरा बाबा तो बूढ़ा री,
   कि सावन आया।
   अम्मा मोरे भाई को भेजो जी,
   कि सावन आया।
   बेटी तेरा भाई तो बाला री
   कि सावन आया।
   अम्मा मेरे मामूँ को भेजो जी
   कि सावन आया।
   बेटी तेरा मामूँ तो बाँका री
   कि सावन आया।
2. दइया री मोहे भिजोया री
   शाह निजाम के रंग में
   कपड़े रँगत ते कुछ ना होत है
   या रंग में मैंने तन को डुबोया री।
   दइया री मोहे....
3. काहे को ब्याही विदेस रे,
   लखि बाबुल मोरे।
   हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल
   कुहकत घर-घर जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
   हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया,
   चुग्गा चुगत उड़ि जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
   हम तो बाबुल तोरे बेले की कलियाँ,
   जोमाँगे चली जाऊँ, लखि ाबुल मोरे।

हम तो बाबुल तोरे खूँटे की गइया,
जित हाँको हँक जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
आम तले ले डोलिया जो निकली,
कोयल ने की है पुकार, लखि बाबुल मोरे।
तू क्यों रोवे है, हमारी कोइलिया,
हम तो चले परदेस, लखि बाबुल मोरे।
नंगे पाँव बाबुल भागत आवै,
साजन डोला लिए जाय, लखि बाबुल मोरे।

4. काहे को ब्याही विदेस रे,
लखि बाबुल मोरे।
भइया के दी है बाबुल महला-दुमहला,
हम को दी है परदेस, लखि बाबुल मोरे।
मैं तो बाबुल तोरे पिंजड़े की चिड़िया
रात बसे उड़ि जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
ताक भरी मैंने गुड़िया जो छोड़ी,
छोड़ा दादा मियाँ का देस, लखि बाबुल मोरे।

5. बहुत रही बाबुल घर दुलहिन, चल तेरे पी ने बुलाई।
बहुत खेल खेली सखियन सों अंत करि लरिकाई।।
न्हाय धोय के बस्तर पहिरे, सब ही सिंगार बनाई।
बिदा करने को कुटुंब सब आए, सिगरे लोग लुगाई।।
चार कहारन डोली उठाई, संग परोहित नाई।
चले ही बनेगी होत कहा है, नैने नीर बहाई।।

6. परदेसी बालम धन अकेली मेरा बिदेसी घर आवना
बिरह का दुख बहु कठिन है प्रीतम अब आजावना।
इस पार जुना उस पास गंगा बीच चंदन का पेड़ ना
इस पेड़ ऊपर कागा बोले कागा का बचन सुहावना।

7. बहुत कठिन है डगर पनघट की
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी।
मोरे अच्छे निजाम पिया-
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
जरा बोलो निजाम पिया,
पनिया भरन को मैं जो गई थी-

दौड़ झपट मोरी मटकी पटकी। बहुत कठिन है...।
खुसरो निजाम के बलि-बलि जाइये
लाज राखे मोरे घूँघट पट की....

8. **राग (स्याही) :**
सगन बिन फूल रही सरसों-
अंबवा फूले, टेसू फूले,
कोयल बोले डार-डार और गौरी करत सिंगार-
मलनियाँ गुंदवा ले आई कर सों।
अंतरा :
तरह-तरह के फूल लगाए, ले गुंदवा हाथें में आए
निजामुद्दीन के दरवज्जे पर,
आवन कह गए आशिक रंग, और
बीत गए बरसों।

9. **राग भैरवी :**
बन से पंछी भये बावरे
ऐसी बीन बजाई साँवरे

10. वह गए बालम वह नदिया पार
आप पार उतर गए, हम तो रहे इस पार।
भाई रे मल्लाहो हम कूँ पार उतार
हाथ का देऊँगी मुंदरा गल का देऊँ हार।
देख मैं अपने हाल कू रोऊँ जार-जार
बी गुणवंता बहुत पी हम भी औगनहार।
बाबुल भेजो मैं वनज कूँ तादा कूँ फूल
पूँछवन बावला जिया में लाया मोल।

(छ) दोहे

1 गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।।

यह दोहा अमीर खुसरो ने अपने गुरू निजामुद्दीन ओलिया की कब्र पर पढ़ा था

2 खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग।
तन मेरा मन पीउ को, दोऊ भए एक रंग।।

3 चकवा चकवी दो जने उनको मारे न कोय।
ईह मारे करतार कै रैन बिछोही होय।।

(ज) गजलें

फारसी की चुनिंदा गजलें

1 उमरम व बुत परस्ती मस्ती गुजश्त हेच,
खातिर बसूई जहद व सवाबम नमी बुरद।
गर्चे खुश अस्त शर्बत सूफी वली चे सूद,
कज सीना-ए-तिश्नगी, व शराबम नमी बुरद।

गजल-2

2 निजाम तोरी सूरत पे बलिहारी,
सब सखियन में चुन्दर मेरी मैली
देख हंसे नर-नारी।
अब के बहार चुन्दर मोरी रंग दे,
निजाम पिया रख ले लाज हमारी।।
निजाम तोरी सूरत पै बलिहारी,
सदका बाबा गंज शकर का
रख ले लाज हमारी
मेरे घर निजाम पिया
निजाम तोरी सूरत पे बलिहारी।
कुतुब फरीद मिलि आए बराती
खुसरो राजदुलारी
निजाम पिया रख ले लाज हमारी

3 बहुत दिन बीते, पिया को देखे, अरे कोई जाओ -
मैं हारी वो जीते, पिया को देखे।
बहुत दिन बीते। सब चुनरिन में, चुनर मोरी मैली,
क्यों चुनरी नहीं रंगते? बहुत दिन बीते।
खुसरो निजाम के बलि बलि जाइए,
क्यों दरस नहीं देते?
बहुत दिन बीते।

4 छापा-तिलक तज दीन्ही रे तोसे नैना मिला के।
प्रेमवटी का मदवा मिलाके,
मतवारी कर दीन्ही रे मो से नैना मिला के।
खुसरो निजाम पे बलि-बलि जाइए
मोहे सुहागन कीन्हीं रे मों से नैना मिला के।

अमीर खुसरो का जन्म भारत में हुआ था। उसका बचपन, शिक्षा तथा कार्यक्षेत्र भी भारत ही था। उसने भारतीय समाज, संस्कृति का अवलोकन बचपन से ही किया था। हब्बेवतन हस्तज बयकीन ईमां अर्थात देश से प्रेम करना ईमान का भाग है। इसलिए डॉ0 परमानन्द ने उनके भारत प्रेम के विषय में लिखा है-

वे भारत को पृथ्वी का स्वर्ग मानते थे-
किश्वरे हिन्द अस्त बहिश्ते बज़मी
अर्थात् भारत पृथ्वी पर स्वर्ग है।
ये देशप्रेम को अपने ईमान का भाग मानते हुए कहते हैं-
दीं ज़ रसूल आमदाहे काई ज़ मरा दीन
हुब्बे वतन हस्तज़ ईमाँ बयकीन।

क्योंकि रसूल ने फर्माया है-'हुब्बुल वतन मन उल ईमाँ' अर्थात् देश से प्रेम करना ईमान का भाग है। इसीलिए वे अपने देश से प्रेम करते थे।

उन्होंने अपनी मसनवी 'नूह-सिपहर' का एक पूरा अध्याय ही भारत की प्रशंसा में लिख दिया था। इसके लगभग 112 शेरों में भारत का ही यशोगान किया गया है। डॉ. ताराचन्द लिखते हैं कि "अपने देश के पशु-पक्षियों, हवा-पानी, नगर-जंगल, नर एवं नारियों के रंग-रूप में खुसरो इतने प्रभावित थे कि बार-बार उनका वर्णन करते हैं और उनके गुणगान से थकते नहीं।"

अपनी प्रसिद्ध मसनवी नूर-सिपहर के पृ. 151 से 157 में भारत को पृथ्वी का स्वर्ग मानने के पक्ष में ये सात दलीलें पेश करते हैं-

1. अव्वलिश इनस्त कि आदम व जिनाँ
   चूँ ज़ असी खुनगई याफ़्त चुनाँ।

पहली दलील यह है कि हजरत आदम यहाँ जन्नत से आए थे। उन्होंने इस स्वर्गिक गुणों के कारण चुना।

2. गर न बहिश्त अस्त हमीं हिंद चिरा
   अज़पये ताउस जनाँ गश्त सरा।

दूसरे इस देश में मोर जैसा स्वर्गिक पक्षी पाया जाता है। यदि यह स्वर्ग नहीं तो स्वर्गीय पक्षी मोर कैसे यहाँ आया।

3. हुज्जत इनस्त सुय्यम गर शके
   कामदन मार ज़ बागे फलकी।

यदि मुझे अब भी शक है तो तीसरी दलील यह है कि यहाँ साँप भी बागे-फलक (स्वर्ग) से आया है।

4. हुज्जते चहारूम मगर इनस्त कि चूँ

जद कदम आदम ज़ हद हिंद बरूँ।

चौथा तर्क यह है कि हज़रत आदम हिंद से बाहर निकले तो स्वर्ग की विभूतियों से वंचित हो गए।

5. हिंद हमा साल कि गुलरूये बुवद
   जी बूद व गुल हमा खुशबू बुवद।

पाँचवें, हिन्दुस्तान की सरजमीन खुशबू और फूलों से हमेश महकती रहती है।

6. बस हमा हाल ज़खूबी बबिही
   हिंद बहिश्त अरूत बा सबात रही।

छठी दलील यह है कि हिन्दुस्तान अपनी नैसर्गिक देनों के कारण बहुत समृद्ध है जो स्वर्ग से बढ़कर है।

7. गर्चे कि बर निस्बते फिरदोशि निहाँ
   बा हमा लुत्फीश चूँ जिंदा अस्त जहाँ।

सातवीं बात यह है कि मुसलमान सारी दुनिया को कैदखाना समझते हैं, लेकिन हिन्दुस्तान में जो हवा बहती है उससे यह उनके लिए खुल्दे बरी (स्वर्ग) बन गया है।

स्पष्टत: अमीर खुसरो बहुमुखी प्रतिभा के लोक रचनाकार थे। डॉ प्रभाकर माचवे के अनुसार भारत में सूफीमत को ललित भाषा में अमीर खुसरो ने जन-जन पहुँचाया। डॉ. नामवर सिंह 'आम आदमी का खुसरो' में कहते हैं-''शेख और सुल्तान, अवाम और अशरफ, हिन्दवी और फारसी-ये जोड़े आपस में इतने विरोधी हैं कि इन सबको एक साथ निबाह ले जाना जोखिम का काम है। बड़ी प्रतिमाएँ ही ऐसा जोखिम उठाती हैं। तेरहवीं-चौदहवीं सदी के मोड़ से गुजरने वाले हिन्दुस्तान में एक 'जीनियस' ने यह जोखिम उठाने की हिम्मत दिखाई दी। उस करिश्मे का नाम है-अमीर खुसरो। खुसरो की मुश्किल यह थी कि एक नहीं बल्कि एक के बाद एक देहली के पाँच सुल्तान उनके करमफर्मा रहे लेकिन वे खुद मुरीद थे तो अपने मुर्शिद ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया के। दिल से प्यार करते थे गांवों और कस्बों में बसने वाले आम लोगों को और इन्हीं देहातियों की सोहबत उन्हें रास भी आती थी लेकिन उठने-बैठने के लिए मजबूर थे अशरफ के बीच। 'नज्म गोई' का शौक था अपनी प्यारी बोली हिन्दवी में लेकिन बोल-चाल था फारसी का और शोहरत भी फारसी में ही शेर कहने से मिल सकती थी। खुसरो के सामने यही दुविधा थी और लुत्फ यह कि इनमें से किसी एक से भी दामन झाड़कर निकल भागने की गुंजाइश न थी। यह 'आइरनीं यह विडम्बना ही खुसरो का नसीब था ओर शायद इसी वजह से खुसरो, खुसरो हुए, बल्कि '**खुसरवे-ममालिक-ए-कलाम**' यानी काव्य-जगत् के सम्राट।''

❑❑❑